॥ पंचम अध्याय ॥

। अमृत और विष उपन्यास में देशकाल वातावरण ।

अमृत और विष उपन्यास में देशकाल - वातावरण -

उपन्यास मानव जीवन का चित्रण है । जिसमें प्रधानतया मनुष्य के चरित्र का सजीव वर्णन रहता है । निश्चय है मनुष्य का संबंध अपने युग, समाज, देश और परिस्थितियों से रहता है । अथवा मानव के चारित्र्य की पृष्ठभूमि रुप में देशकाल का चित्रण उसका एक आवश्यक अंग है

उपन्यास की कथा को सत्यरुप देने के लिए, उसे सजीव बनाने के लिए वातावरण की सृष्टी उपन्यासकार के लिए अनिवार्य है । व्यक्तित्व के निर्माण में वातावरण का बहुत कुछ हाथ होता है इसलिए उसके व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए भी उपन्यास में वातावरण की सृष्टी अनिवार्य है । देशकाल के अन्तर्गत किसी देश या समाज की सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक परिस्थितियाँ आचार विचार, रितिरिवाज, रहन सहन, समाज की कुरितियाँ एंव विशेषताएँ आदि समग्री जाती है । प्राकृतिक चित्रण भी उद्दीपित रुप में पात्रो की मानसिक स्थिति को निश्चित करने में सहाय्यक होते है । देशकाल में स्थानीय रंग होने पर उपन्यास में प्रभावात्मकता आ जाती है । तथा कृत्रिमता नष्ट होकर स्वाभाविकता बट जाती है । मगर देशकाल वातावरण की सृष्टी करते समय एक बात पर ध्यान देना आवश्यक है । देशकाल वातावरण कथानक के स्पष्टीकरण में साधन ही रहे, साध्य न बन जाए । इस दृष्टी से देशकाल वातावरण की श्रेष्ठता और स्वाभाविक सजीवता उसके संतुलित होने पर है ।

सामाजिक उपन्यासो में तो लेखक प्रायः अपने युग की देखी सुनी और अनुभूत पृष्ठभूमि देता है और पाठक के समसामाजिक होने के कारण उसको जाँचने और विश्वास करने का अवसर रहता है । आगामी युगों के पाठक के लिए तो सामाजिक उपन्यासकार सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास की सामग्री प्रदान करता है ।

देशकाल और परिस्थितियों के संदर्भ में पाठक पात्रो के कार्यकलापो का सही मूल्यांकन करता है कथानक को वास्तविकता का आभास देने के साधनों में वातावरण मुख्य है । इसके लिए स्थानीय ज्ञान अत्यंत आवश्यक होता है । वर्णन में देश विरुध्दता और काल विरुध्दता के दोष नहीं होने चाहिए । देशकाल के चित्रण का वास्तविक उदेश्य कथानक और चरित्र का स्पष्टीकरण

है । अतः स्थानिक विशेषताओं का ध्यान रखते हुए प्रकृति की भावानुकूल पृष्ठभूमि देना उपन्यास की रोचकता की वृध्दी में सहायक होता है ।

देशकाल को प्रायः वातावरण का बाह्य प्रकार कहा जाता है । इसी दृष्टिसे देशकाल के प्रकार निम्नलिखित है –

१) सामाजिक –

सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाले सभी वर्णन इसमें आते है । उदा. वेशभूषा, रितिरिवाज, सामाजिक वर्ग, शिक्षा, व्यापार, संस्कृति आदि

२) प्राकृतिक –

इसके अंतर्गत उपन्यासकार कथा के पात्रो के सुख दुःख के साथ प्रकृति की समता विषमता को भी प्रस्तुत करता है ।

३) ऐतिहासिक –

इसमें देशकाल के विषय में अधिक सतर्क रहना पडता है ।

अमृत और विष उपन्यास में सामाजिक जीवन के वातावरण निर्मिती का चित्रण सजीव रुप में हुआ है । स्वतंत्रता के बाद देश की आर्थिक, राजनितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्र इस उपन्यास में है ।

इस उपन्यास की मूल कथा लखनऊ के एक मुहल्ले की है । वहाँ की गली मुहल्लो की दैनिक चर्चाएँ, गोमती में आई बाढ, वहाँ के विभिन्न वर्गों एवं संस्कारों के व्यक्तियाँ, राजनितिक, समाजिक परिस्थितियाँ, हिंदू मुस्लिम झगडे, नयी पुरानी पीढी का संघर्ष आदि का विस्तृत चित्रण किया है । लखनऊ के साथ ही इसके कुछ प्रसंग सारसलेक से लेकर रुस के मास्को, ताशकन्द, लेनिनग्राद, समरकन्द आदि स्थानो तक से सम्बन्ध है ।

डायरी लेखन में कथा मथुरा, आगरी तक गई है । अतः उपन्यास में स्थान की व्यापकता का

समावेश हुआ है । उपन्यास की मुख्य कथा लखनऊ की है । किन्तु लखनऊ के परिवेश के चित्र लेखक ने इतनी कुशलता से वर्णित किए है कि वे पूरे देश के परिचायक बन गये है । लखनऊ शहर के चहल पहल भरे जीवन का चित्र इसप्रकार उपन्यास मे किया है –

"चारो ओर दिवाली सा जगर मगर, शहर, दुकाने, दिल जलानेवाली तुमबनी आतिशे, आँखे सेंकनेवाली खूबसूरत जादुई भट्टियाँ, फिल्मी गानों की गूंज, रेडियों का स्वर प्रसार, मोटरों बसो के बेसूर भोंपू, रिक्शेवालों की ट्रिंग ट्रिंग घण्टियाँ, घोडो के घुंघरु चहल पहल भरे जीवन की गूँज " १

केवल लखनऊ शहर तक ही सीमित नहीं, वरन् भारत के अनेक शहरों के चहल पहल भरे जीवन का परिचायक बन जाता है ।

नागरजी की अधिकांश रचनाएँ लखनऊ की पृष्ठभूमि पर ही लिखित है । इस उपन्यास में लखनऊ के शहरी वातावरण का चित्रण किया है । लेखक ने वर्णन शैली के कौशल से वातावरण का चित्रण किया है । लेखक ने वर्णन शैली के कौशल से वातावरण की सृष्टी की है । वातावरण की सजीवता और चित्रात्मकता की दृष्टी से प्रस्तुत उपन्यास में गोमती की बाढ का और बारात का दृश्य देखा जा सकता है । इससे नागरजी की वातावरण निर्मिती की क्षमता और सुक्ष्म निरिक्षण शक्ति का परिचय मिलता है ।

इस उपन्यास में प्रस्तुत राजनीति के चित्र, अंग्रेजों के काल में, स्वातंत्र्योत्तर काल में और वर्तमान युग में भी दिखाई पडते है । अंग्रेजी हुकूमत के समय लगान की दरे गाँव की पैदावार से भी अधिक होती थी जो वर्तमान स्वदेशी शासन से जरा जरा सी वस्तूओं पर टॅक्स लगते है पहले जनता अंग्रेजी शासन से आक्रान्त थी तो अब स्वदेशी शासन से हाजी नबीबख्श अपने समय की भारतीय राजनीति का चित्र प्रस्तूत करते हुए कहते है –

"समाजवाद की कलई से चमचमाता उनका जनघाती उद्देश्य जीत गया, किसी ने ध्यान तक न दिया । रुपयों के आगे लोगों की चिंतन शक्ति को भ्रमित करके उनकी बची कुची स्वाभाविक

शक्तियों को रुकना तोड़ना क्या अच्छी बात है ? कॉंग्रेस सोशलिजम ला रही है और जिस जनता के लिए ला रही है उस जनता को हमारे महान महानतम नेताओं ने बड़े कामों से फुरसत न मिलने की वजह से मेरे और राधेरमन जैसो के हाथ में सौंप रखा है । जैसी छोटी बेगम के हाथों राजी नबीबख्श ने अपनी पत्नी मुमताज को सौंप रखा था और जिसने उसे घुलाकर मार डाला । हाजी अ पनी मुमताज के हत्यारे है । हमारे नेता अपनी जनता के हत्यारे होंगे । २२ राजनीती का यह चित्र व्यापक परिवेश को भी चित्रित करता है

नयी और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष, पुराने पीढ़ी की आशा, आकांक्षाएँ, विचार, विद्रोह, राजनीति के दाँवपेच, भ्रष्टाचार, आधुनिक नारी की जाग्रत चेतना इन सभी बातो के चित्रण से नागरजी ने युगीन जीवन की पृष्ठभूमि का यथार्थ चित्रण किया है –

"आजादी के बाद आया फूट, असंघटन, विलास, व्यभिचार, लूट, डाके, खून और काले बाजार का जमाना ।" ३

युग की इस पृष्ठभूमि पर युवा पीढ़ी का आक्रोश और असंतोष व्यक्त हुआ है ।

अमृत और विष उपन्यास में चित्रित युग जीवन बीसवी सदी के आरंभ से सन आठ तक का है इसमें मध्यवर्ग के जीवन का प्रतिबिंब है । स्वंय नागरजी ने इस तथ्य को उद्‌घाटित किया है ।

"मैने बीसवी सदी के आरंभ से सन साठ तक का मानसिक लेखा जोखा रखते हुए देश के बौध्दिक वर्ग के मानसिक विभाजन का चित्र यथामति प्रस्तुत किया है । उसमें केवल मंत्रीगण ही नही वरन् प्राध्यापक, अध्यापक, लेखक, कलाकार, पत्रकार और सभी राजनीतिक दलो का उल्लेख है । मैने स्वंय अपनी कमजोरियों को भी नही बख्शा है ।" ४

इस प्रकार उपन्यास में चित्रित समाज मलिका विक्टोरिया युग से लेकर आज तक की पृष्ठभूमि में स्पष्ट रुप से प्रस्तुत हुआ है । डॉ. सुरेश सिन्हा के मतानुसार यह उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर कालीन परिस्थितीयों का दर्पण है –

"समाज की रुढ एवं जर्जर मान्यताओं, प्राचीन संस्कारों, राष्ट्रीयता एवं संस्कृति की गौरवशाली परंपरा को अकेले निर्वाह करनेवाले देशियों, उनके दलालों एवं पूँजिपतियों, चोर बाजारियों, युवा पीढी का आक्रोश, दिशाहीनता एवं शक्ति, नया रास्ता अन्वेषित करने की आकुलता तथा अपने अधिकारों के लिए जनता की सेवा करनेवाले अपने ही भीतर पुराने संस्कारो से जुझते हुए युवावर्ग के मध्य तीव्र संघर्ष को अनेक स्तरो पर एवं विविध आयामों के बीच चित्रित करके नागरजी ने इस उपन्यास को स्वातंत्र्योत्तर काल में संक्रमणकालीन भारतीय परिस्थितियों का दर्पण बना दिया है ।" ५

इस प्रकार इस उपन्यास में नागरजी ने स्त्री – पुरुषों के बदलते संदर्भ, युवा आक्रोश, राजनीति, नेताओं की स्वार्थपरता, सांप्रदायिक दंगे, अन्धविश्वास, पूँजीवादी शोषण आदि बातो का वर्णन करके उपन्यास की व्यापक पृष्ठभूमी तैय्यार करके वातावरण की सजीवता से सृष्टी की है ।

निष्कर्ष –

अमृत और विष में ऐसे अनेक चित्र है जो देशकाल की व्यापकता को प्रस्तुत करते है । नागरजीने अपनी अधिकांश रचनाएँ लखनऊ की पृष्ठभुमि पर लिखी है । इसकी भौगोलिक सीमा भी लखनऊ की धरती से जुडी है । उन्होने लखनऊ की हिन्दी, अवधी, मुस्लिम सभी सामान्य संस्कृतियों और स्थानो का सजीव अंकन किया है । उपन्यास के वैविध्य और विस्तार में अनेकानेक घटनाओ का वर्णन वातावरण को सजीव बनाता है । इस उपन्यास की वर्णनात्मकता बारीक तानों बानो से गुंथी हुई है ।

रमेश के बहन के विवाह का वर्णन, बाद की भयानकता, बाद पीडीतो की करुणा, छात्रो के असंतोष और संघर्ष, पूँजिपतियों के कुचक्र, चुनावों के हथकंडे, निम्न मध्यवर्ग के अभावों की कहानी, गली कुचों में रहनेवाले स्त्री पुरुषो की मनोवृत्ति, आदि न जाने कितनी व्यापकता, कितना ज्ञान भण्डार इसकी विशेषता में समाहित है । कही पर तो वह स्वंय अपने चिन्तन में उलझ जाता है और फिर नवयुवकों की मनोवृत्ति उनके चिन्तन, समाज की प्रवृत्तियों आदि के विश्लेषण की दृष्टी से लेखक स्थूल बातें में उलझ कर रह जाता है । इस प्रकार अन्धविश्वास, छुआछूत, सास्कृतिक रिती रिवाज, राजनीति, नेताओं की स्वार्थपरता, सांप्रदायिक दंगे, बरादरी की लडाई, धार्मिक स्थलो के परिवेश के चित्रो में देशकाल की व्यापकता का समावेश हुआ है ।

वर्तमान स्वातंत्र्योत्तर युग की अनेक समस्याओं का चित्रण और विश्लेषण हमें इस उपन्यास में मिलता है । लेखक ने इसके अंतर्गत विक्टोरिया युव से लेकर देश के स्वातंत्र्योत्तर युग तक की कथा कही है । लखनऊ की पृष्ठभूमि का चित्रण भी अत्यंत सजीवता से चित्रित किया है । नागरजी ने स्वातंत्र्योत्तर युग को विशेष विस्तार के साथ इस कृति में प्रस्तुत किया है । और इस स्वातंत्र्योत्तर युग में जो तमाम समस्याएँ हमारे सामाजिक जीवन की सतह पर अकस्मात उतराने लगी है । उनका भी गंभीर विश्लेषण किया है । स्वातंत्र्योत्तर युग का कोई भी महत्वपुर्ण प्रसंग इस उपन्यास में लेखक की दृष्टी से छूटने नहीं पाया है । इसप्रकार नागरजीने अमृत और विष उपन्यास में जो देशकाल का चित्रण किया है वह सफल है ।

संदर्भ

१) अमृतलाल नागर – 'अमृत और विष' पृ.४३८

२) वहीं – पृ.५३५

३) वहीं – पृ.१०३

४) वहीं – पृ.६०

५) डॉ. सुरेश सिन्हा – 'हिन्दी उपन्यास' पृ.२५६